शिक्षक हस्तपुस्तिका

fof'k'Vvko';drkvksa okys cPpksa dh f'k{kk

उद्देश्य

इस अध्ययन सामग्री को पढ़ने के पश्चात् आप —

- विशिष्ट आवश्यकताओं वाले बच्चों जैसे सुनने में कठिनाई, देखने की क्षीण शक्ति, शरीर के ऊपरी भाग में विकलांगता के कारण लिखने में कठिनाई मानसिक अक्षमता के कारण सम्बोधों या अवधारणाओं को समझने में कठिनाई, किसी विशेष विषय को भली भाँति समझने में कठिनाई अनुभव करने वाले बच्चों की पहचान कर सकेंगे।
- अक्षमता के आधार पर विशिष्ट आवश्यकताओं वाले बच्चों का वर्गीकरण कर सकेंगे।
- इन वर्गो के बच्चों की विशिष्ट शैक्षिक आवश्यकताओं को सूचीबद्ध कर सकेंगें तथा तदनुसार उपयुक्त शिक्षण विधाओं तथा साम्रगियों की व्यवस्था करके उन्हें अन्य बच्चों के समान स्तर पर ला सकेंगें।
- कक्षा सहपाठियों तथा विद्यालय सहपाठियों को इन वर्गों के बच्चों के साथ सम्मान का ध्यान रखते हुए स्नेहपूर्ण और आत्मीय व्यवहार करने के लिए प्रेरित कर सकेंगे।
- इन बच्चों के विषय में अभिभावक तथा स्थानीय समुदाय के सदस्यों के सोचने के ढंग में अनुकूल परिवर्तन ला सकेंगे।

अक्षमता के प्रकार :

सामान्य रूप से अध्यापकों को अध्यापन के समय जिन विशिष्ट अक्षमताओं वाले छात्र/छात्राओं को शिक्षा देने का कार्य करना पड़ता है वे निम्नलिखित प्रकार के है :

१. श्रवण सम्बन्धी अक्षमता

२. दृष्टि सम्बन्धी अक्षमता

३. अस्थि सम्बन्धी अक्षमता

४. मानसिक अक्षमता

५. सीखने से सम्बन्धित अक्षमता

अक्षमता क्या है :

आपको अपनी कक्षा में या कक्षा के बाहर कुछ ऐसे बच्चे मिले होंगे जिनकी जरूरतें कुछ विशेष प्रकार की होती हैं अर्थात् बच्चों के सीखने तथा काम करने की क्षमता भिन्न–भिन्न होती है। कुछ बच्चे बहुत जल्दी और सरलता से सीखते है, जबकि कुछ बच्चे देर में तथा अधिक प्रयत्न करने पर सीख पाते हैं।

कक्षा में कुछ बच्चे ऐसे भी होते हैं जिनको खाने में कठिनाई होती है। सीखने के लिए उन्हें आपसे कुछ अतिरिक्त सहायता की आवश्यकता होती है। कभी–कभी आप उनकी समस्याएं समझ पाते हैं, कभी–कभी नहीं समझ पाते। आपकी विशेष मदद के बावजूद उनकी अनेक समस्याएं बनी रहती है। ये बच्चे कौन है? तथा इनकी अतिरिक्त आवश्यकताएं क्या है? यदि आप इन समस्याओं की प्रकृति और बच्चों की आवश्यकताओं को समझेंगे तो उनकी ठीक से मदद कर सकेंगे। आइए! हम उन बच्चों को सीखने की समस्याओं को तथा यह जानने का प्रयास करें कि हम उनकी कैसे मदद कर सकते है। हो सकता है कुछ बच्चों में अन्धापन, बहरापन, मानसिक पिछड़ापन जैसी गम्भीर अक्षमताएं हो अथवा इनसे सम्बन्धित दृष्टि श्रवण, वाणी, मानसिक मंदता एवं अधिगम अक्षमता जैसे दोष हों। हो सकता है ऐसे बच्चे आपके विद्यालय में न हो, हो सकता है उनके माता–पिता आपसे सम्पर्क करने में भी हिचकिचाएं, हो सकता है आपने उनको इसलिए भर्ती न किया हो कि वे आपकी दृष्टि में विद्यालय में पढ़ने के योग्य नहीं है। या आप उनकी मदद नहीं कर सकते हैं।

परन्तु यह सच है कि यदि उन्हें कुछ समय पहले ही विद्यालय में भर्ती किया गया होता और उनकी समस्याओं को समझकर सहायता दी गयी होती तो उनमें से बहुत से बच्चे सामान्य बच्चों की तरह सीख रहे होते या उनकी समस्या गम्भीर होने से रोकी जा सकती थी। यदि उनमें से कुछ बच्चों को विशिष्ट विद्यालयों में भेजा गया होता तो वहां उन्हें विशेष सुविधायें उपलब्ध हो जाती । विद्यालय अपनी कक्षाओं में तथा कक्षाओं के बाहर विशेष प्रकार से प्रोत्साहित करके आप कई प्रकार के विकलांगों की सहायता कर सकते हैं। अब तक हमने उनकी संवेदनशीलता सीखने

सम्बन्धी समस्याओं को समझने की कोशिश ही नहीं की। हो सकता है आपकी इस सोच के अभाव के कारण उन्हें कम अंक मिले हों, हो सकता है इन बच्चों की सीखने सम्बन्धी समस्याओं के कुछ खास कारण रहे हों लेकिन फिर भी हमनें उन्हें लापरवाह, असावधान, मन्दबुद्धि अथवा कोई ऐसा नाम दिया हो जिससे समस्या और अधिक बिगड़ी हो।

कुछ लोगों का मानना है कि सभी प्रकार की विकलांगता वाले बच्चों की शिक्षा के लिए विशेष प्रकार की तकनीकों को आवश्यकता पड़ती है जो सच नहीं है। रोजमर्रा की कक्षा में पढ़ाने वाले अध्यापकों को इन बच्चों को पढ़ाने के लिए विशेष तकनीक की आवश्यकता नहीं पड़ती है क्योंकि विशेष प्रकार की तकनीक की आवश्यकता उन विकलांग बच्चों को सिखाने के लिए पड़ती है जिनका रोग असाध्य या कठिन रूप धारण कर चुका है। साधारण रूप से विकलांग बच्चों की शिक्षा में विशेष तकनीक की नहीं वरन् शिक्षक के अनुकूल दृष्टिकोण के विकास की अधिक आवश्यकता है।

विकलांगताओं के कारण :–

बच्चों की अधिक समस्याओं का जन्म अनेक कारणों से होता है जिनमें कुछ कारण बच्चों के अन्दर निहित होते हैं, कुछ अन्य वातावरण से सम्बन्धित होते है। बच्चों की अधिगम समस्याओं से सम्बन्धित आन्तरिक कारण निम्नवत् हो सकते है।

- बौद्धिक क्रियाकलाप का निम्नस्तर तथा विकास की मन्दगति।
- दृष्टि विषयक समस्या (देखने में कठिनाई)।
- श्रवण तथा वाक समस्या (सुनने तथा बोलने में कठिनाई)
- हाथ–पैर का क्षतिग्रस्त होना या हाथ–पैर का न होना, अंगों की विकृति, मांसपेशियों के तालमेल में समस्या होने से क्रियाकलाप में कठिनाई।
- मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं जैसे प्रत्यक्षीकरण, अवधान, स्मृति विषयक समस्याएँ।
- दृष्टि तथा मांसपेशियों में तालमेल (Visual Motor Co-ordination) न होने से पढ़ने–लिखने, वर्ण विन्यास में कठिनाई।

कुछ कारण बच्चों के घर–परिवार के वातावरण से सम्बन्धित होते है, जैसे –

- माता–पिता के स्नेह में कमी।

- परिवार के अन्य सदस्यों द्वारा बच्चों को दूसरे बच्चों की भाँति समान स्तर पर स्वीकार न किया जाना अर्थात् बच्चों को हीनभावना से देखना।
- सीखने के समान अवसर न मिलना तथा बातचीत करने के कम अवसर मिलना।
- शिशु स्तर पर लालन–पालन के अनुपयुक्त तरीके अपनाना।

विद्यालयीय वातावरण से सम्बन्धित कारण –

- शिक्षक का बच्चे से कम लगाव होना।
- सीखने की गति धीमी होने पर बच्चे के प्रति गलत धारणा बना लेना।
- कक्षा में अनुकूल सामाजिक वातावरण न होना।
- सामान्य बच्चों का विकलांग बच्चे के साथ प्रतिकूल व्यवहार करना।
- उत्तरदायित्व निर्वहन तथा सुविधाओं की भागीदारी जैसी भावनाओं के प्रति उदासीनता होना।
- बच्चों की विशिष्ट आवश्यकताओं तथा भौतिक सुविधाओं के सामंजस्य का अभाव होना।

प्राथमिक स्तर पर काम करने वाले अध्यापक यह समझ लें कि इन बच्चों की अपंगता का क्या स्वरूप है तथा किस हद तक अपंगता है, तभी वे प्राप्त जानकारी के अनुसार अन्हें शिक्षा देने के दायित्व का यथोचित रूप से निर्वहन करने के लिए तैयार हो सकेंगे। सामान्य विद्यालयों के अध्यापकों में इन बच्चों की शिक्षा संबंधी विशेष प्रकार की जरूरतों को समझने की आवश्यकता है जिससे उनकी आवश्यकता के अनुरूप अनुकूल शिक्षा को नियोजित कर सकें। इसका उत्तरदायित्व सबसे अधिक कक्षा के अध्यापकों पर आता है क्योंकि उनका इन बच्चों से सीधा सम्पर्क होता है तथा उन्हें बच्चों को ध्यान से देखने का अवसर भी मिलता है।

ईकाई – २

d& v{kerkxzLr cPpksa ds fy, lesfdr f'k{kk %

अवधारणा तथा प्रक्रिया

एकीकृत शिक्षा का आशय विकलांग या अक्षमताग्रस्त बच्चों को ऐसा वातावरण प्रदान करना है जिसमें उनकी सीखने की प्रक्रिया में कम से कम बाधाएँ रह जाय, वे कक्षा के शेष बच्चों की भाँति सीख–समझकर आगे बढ़े और उनका समुचित विकास हो इससे सामान्य बच्चों और अक्षमताग्रस्त बच्चों के बीच सभी स्तरों पर स्वस्थ सामाजिक सम्बन्ध विकसित होने के लिए अवसर मिलता है। सामाजिक गतिविधियों में समान रूप से भाग लेने का अवसर मिलने से उनमें परस्पर अलगाव या दूरी घट जाती है तथा एक दूसरे के निकट आने की संभावनाएँ बढ़ जाती है। इस प्रकार के वातावरण से अक्षमताग्रस्त बच्चों को समान शैक्षिक अवसर प्राप्त होता है तथा वे समाज के अन्य सदस्यों की भाँति जीवन के विविध क्षेत्रों में कार्य करने की योग्यताएँ विकसित कर लेते हैं।

सामान्यतः सभी के लिए और विशेषतः अध्यापकों के लिए हृदयंगम करने की बात यह है कि विभिन्न प्रकार की अक्षमताओं से ग्रस्त बच्चे भी समाज के महत्वूपर्ण अंग है और देश तथा समाज के विकास कार्यों में वे भी अन्य लोगों की भांति महत्वपूर्ण योगदान कर सकते है। अतः यह स्वाभाविक अपेक्षा है कि इन बच्चों की शैक्षिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए उपयुक्त व्यवस्था की जाय। इस दृष्टि से उन्हें समाज के शैक्षिक तथा गैरशैक्षिक कार्यों में भाग लेने का अवसर एवं प्रोत्साहन देना बहुत आवश्यक है।

निष्कर्ष के रूप में समेकित शिक्षा का आशय इस प्रकार है :

- समाज द्वारा अन्य सामान्य लोगों की भाँति इन अक्षमता ग्रस्त बच्चों को स्वीकृति दिलाना और उन्हें शिक्षा तथा रोजगार के समान अवसर उपलब्ध कराना।
- सामान्य बच्चों तथा अक्षमता ग्रस्त बच्चों के बीच स्वस्थ सामाजिक सम्बन्ध विकसित करना जिससे इन बच्चों के प्रति भेदभाव मूलक दृष्टिकोण को बदलकर अनुकूल तथा सकारात्मक बनाया जा सकें।
- जीवन तथा रहन–सहन के स्तर को उन्नत करने के लिए इन बच्चों के नागरिक अधिकारों के उपभोग हेतु आवश्यक सामर्थ्य का विकास सुनिश्चित करना।

⌘ उन्हें स्वतंत्र तथा आत्मनिर्भर जीवन व्यतीत करने हेतु तैयार करना।

⌘ इस प्रसंग में यह तथ्य ध्यान देने योग्य है कि एकीकरण ही अलगाव की समस्या का व्यावहारिक समाधान है क्योंकि इससे अक्षमताग्रस्त बच्चों को सामान्य बच्चों की भांति शिक्षा प्राप्त करने में सहायता प्राप्त होती है। यह व्यवस्था व्यय साध्य नहीं है तथा इससे बच्चों की अनेक प्रकार की समस्याओं का समाधान हो जाता है।

अक्षमताग्रस्त बच्चों की शिक्षा के सम्बन्ध में अनेक प्रकार की गलत धारणाएँ प्रचलित हैं। उदाहरण के लिए बहुत से अध्यापकों का विश्वास है कि सभी प्रकार की अक्षमताओं से ग्रस्त बच्चों की शिक्षा के लिए विशेष प्रकार की तकनीकों की आवश्यकता होती है किन्तु यह सत्य नहीं है। प्रतिदिन की कक्षा में पढ़ाने वाले शिक्षकों को इन बच्चों को पढ़ाने के लिए किसी विशेष तकनीक की आवश्यकता नहीं होती क्योंकि विशेष प्रकार की तकनीकों की आवश्यकता उन बच्चों के लिए होती है जिनका रोग असाध्य या गम्भीर रूप धारण कर चुका है। इन बच्चों में भी आधारभूत कौशल या दक्षता लाने तक ही इन तकनीकों की आवश्यकता होती है। साधारण रूप से विकलांग या अपंग बच्चों की शिक्षा में विशेष तकनीक की आवश्यकता नहीं पड़ती है। विशेष दक्षता प्राप्त करके तो असाधारण रूप से विकलांग बच्चों को भी नियमित रूप से चलने वाली कक्षा में पढ़ाया जा सकता है।

विकलांगता या अक्षमता, समेकित शिक्षा के लिए इसकी आवश्यकताएँ

विकलांगता या अक्षमता में सामान्यतः निम्नलिखित श्रेणियाँ आती है –

(१) श्रवण सम्बन्धी अक्षमता (२) दृष्टि सम्बन्धी अक्षमता (३) अस्थि सम्बन्धी अक्षमता (४) मानसिक अक्षमता (शिक्षा के योग्य) तथा (५) अधिगम की दृष्टि से अक्षमता।

(१) श्रवण सम्बन्धी अक्षमता :– इसमें सुनने की क्षमता का सामान्य ह्रास हो जाता है। इससे ग्रस्त बच्चों को कक्षा में अन्य छात्रों के साथ बैठकर सुनने और समझने में कठिनाई होती है।

अपेक्षित उपाय :– ऐसे बच्चों के कान की जांच कराकर इलाज की व्यवस्था करना आवश्यक है। कक्षा में पढ़ाते समय उन्हें अगली पंक्ति में बैठाने की व्यवस्था आवश्यक है। पाठ्यक्रम में भी अनुकूलन करना उपयुक्त होगा। इस प्रकार के बच्चों को प्रारम्भ से अन्त तक नियमित विद्यालयों में शिक्षा दी जाती है।

(२) दृष्टि सम्बन्धी अक्षमता :– ऐसे बच्चों की देखने की शक्ति क्षीण होती है। इन्हें कक्षा में अन्य बच्चों के साथ बैठकर सीखने–समझने में कठिनाई होती है।

अपेक्षित उपाय – इस अक्षमता से ग्रस्त बच्चों को आवर्धक लैंस वाले चश्में सुलभ कराने की व्यवस्था अपेक्षित है। पाठ्यक्रम में यथाचित अनुकूलन किया जा सकता है। कक्षा में आगे बैठाने तथा आवश्यकतानुसार समायोजित करने योग्य मेज–कुर्सी की व्यवस्था आवश्यक है। इन्हें भी प्रारम्भ से अन्त तक नियमित विद्यालयों में शिक्षा दी जाती है।

(३) अस्थि सम्बन्धी अक्षमता :– ऐसी अक्षमता वाले बच्चों के शरीर के ऊपरी भाग में कोई दोष आ जाने के कारण लिखने में कठिनाई होती है। हाथ–पैर में दोष के कारण चलने–फिरने में दिक्कत होती है।

अपेक्षित उपाय :– इनके लिए आवश्यकतानुसार समायोजित करने योग्य फर्नीचर की व्यवस्था की जानी चाहिए। मोटी कलम, मोटी पेंसिल, कागज, पुस्तक होल्डर आदि भी सुलभ कराना आवश्यक है। हाथ–पैर में दोष वाले बच्चों की शारीरिक दशा में सुधार के उपाय करना अभीष्ट होगा। पहिया गाड़ी में बैठने की अनुमति दी जानी चाहिए जिससे वे इधर–उधर चल सकें इस अक्षमता से सामान्य रूप से प्रभावित बच्चों को सामान्य कक्षा में शिक्षा दी जाती है।

(४) मानसिक अक्षमता (शिक्षा के योग्य) :– इस श्रेणी के बच्चों को कक्षा में पढ़ाई गयी अवधारणाओं को समझने में कठिनाई होती है।

अपेक्षित उपाय :– बताई गयी अवधारणा को बार–बार दुहराने या आवृत्ति करने की आवश्यकता होती है मूर्त परिस्थितियों में सीखने–समझने का अवसर देने से उन्हें अवधारणाओं का बोध हो जाता है। इन बच्चों को हमारी शिक्षा प्रणाली की नियमित कक्षाओं में पढ़ाया जा सकता है।

(५) अधिगम की दृष्टि से अक्षमता :– इस वर्ग के बच्चों की सामान्य कोटि की विशेष प्रकार की समस्याएं होती हैं। इन समस्याओं को प्रारम्भिक अवस्था में ही पहचानने की आवश्यकता होती है। यह बच्चे किसी विषय के शेष स्थानों को समझने में वे कठिनाई का अनुभव करते है।

अपेक्षित उपाय :– प्रारम्भ में ही उनकी समस्याओं की जानकारी प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए। विषय की जानकारी और सीखने में सहायता के अनेक प्रकार के अधिगम उपकरणों की व्यवस्था की जानी चाहिये। इसके साथ ही प्रारम्भिक शिक्षा की अवस्था में अधिक से अधिक उपचारात्मक तथा सुधारात्मक कदम उठाने की आवश्यकता होगी। इन बच्चों को प्रारम्भ से अन्त तक सामान्य विद्यालयों में शिक्षा दी जाती है।

सामान्य जानकारी के लिए कुछ ऐसी अक्षमताओं का उल्लेख किया जा रहा है जिनसे ग्रस्त बच्चों को विशेष प्रकार के विद्यालयों में शिक्षा दी जाती है। ये अक्षमताएं निम्नवत् है : (१) श्रवण हीनता (२) दृष्टि हीनता।

(१) श्रवण हीनता :– इस अक्षमता से ग्रस्त व्यक्ति में श्रवण क्षमता का पूर्णरूप से लोप हो जाता है। ऐसे बच्चों को शिक्षा देने में भाषा तथा वाणी के विकास में समस्याएं आती है।

अपेक्षित उपाय :– इस श्रेणी के बच्चों में भाषा तथा वाणी के विकास के लिए वाक उपचार की व्यवस्था होती है। इन्हें विशेष प्रकार के विद्यालय या कक्षा में तैयार करने की व्यवस्था की जा सकती है। आधारभूत शैक्षिक या अकादमिक कौशलों का विकास करने के बाद इन्हें नियमित प्रकार के विद्यालय में शिक्षा दी जा सकती है। उनके लिए आवश्यकतानुसार उपकरणों, साधनों का प्रयोग अपेक्षित हो सकता है।

(२) दृष्टिहीनता :– इस अक्षमता से व्यक्ति में पूर्णरूप से अन्धापन आ जाता है। देख न पाने के कारण उन्हें चलने–फिरने में भी कठिनाई होती है।

अपेक्षित उपाय :– दृष्टिहीन बच्चों को ब्रेल लिपि द्वारा पढ़ना–लिखना सिखाया जाता है। चलने–फिरने में सुविधा के लिए विशेष प्रकार का प्रशिक्षण दिया जाता है। इनको श्रवण सहायक उपकरणों की सहायता से शिक्षा दी जा सकती है।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि जो बच्चे गम्भीर रूप से अपंग या विकलांग होते है उन्हें विशेष उपचारात्मक शिक्षा द्वारा तैयार करने की आवश्यकता होती है। एक बार आधारभूत शैक्षिक योग्यता का विकास हो जाने पर यदि उन्हें पर्याप्त सुविधाएं दी जाय तो उनका कार्य सामान्य बच्चों की तरह चलने लगता है।

इस सम्बन्ध में यह स्पष्ट करना प्रासंगिक है कि कक्षा में एकीकरण का अर्थ यह कदापि नहीं है कि विकलांग बच्चों को शिक्षित करने का सम्पूर्ण दायित्व संसाधन (विशेष प्रशिक्षित) अध्यापक का है। संसाधन अध्यापक, एक विशेष प्रकार का अध्यापक होता है जिसकी सहायता उन विद्यार्थियों को उपलब्ध कराई जाती है जिनको इस प्रकार की सहायता की जरूरत होती है। इस अध्यापक का कार्य विकलांग बच्चों में विशेष कौशल विकसित करने में उनकी सहायता करना तथा प्रारम्भिक स्तर पर आधारभूत अकादमिक कौशल के विकास से जुड़ी समस्याओं को हल करने में और नियमित कक्षा में पढ़ाने वाले अध्यापकों की मदद करना है। सहायक सामग्री के निर्माण में भी वह नियमित अध्यापकों की सहायता करता है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि –

- ⌘ एकीकरण विशेष प्रकार के विद्यालयों का विकल्प नहीं है वरन् ये दोनों एक दूसरे के पूरक है।
- ⌘ सामान्य विद्यालयों में विकलांग या अक्षमताग्रस्त बच्चों को पढ़ाने से किसी प्रकार की बाधा का सामना नहीं करना पड़ता है।
- ⌘ एकीकरण का अभिप्राय सभी विकलांग बच्चों को विशेष प्रकार के विद्यालयों में भर्ती करना तथा प्रारम्भ से अन्त तक उनको इसी में शिक्षा देना नहीं है।

विकलांग बच्चों को सामान्य विद्यालयों में भर्ती कराकर सारी जिम्मेदारी विशेष अध्यापक पर छोड़ना भी एकीकरण नहीं है।

विशेष शैक्षिक प्रावधान :

विकलांग या अक्षमताग्रस्त बच्चों को शिक्षा के लिए कई प्रकार के शैक्षिक प्रावधान उपलब्ध कराये गये है जिनमें से कुछ इस प्रकार है :

१. समेकित शिक्षा विन्यास (क्षतिपूरक सहायक उपकरण) :– इस श्रेणी में ऐसे बच्चे आते है जिनकी अपंगता या अक्षमता बहुत ही कम अथवा सामान्य प्रकार की है। इनमें से अधिकतर बच्चे सामान्य विद्यालयों में पढ़ रहे होते है। उन्हें केवल कुछ ऐसे उपकरणों की आवश्यकता होती है जिससे वे अपने इन्द्रिय दोष या कमी को पूरा कर सकें, जैसे कुछ ऊँचा सुनने वाले बच्चों को श्रवण उपकरण देने से उसका काम चल जायेगा। कम दिखाई देने पर आवर्धक शीशे की सहायता से विद्यार्थी पढ़ सकता है।

२. समेकित शिक्षा की व्यवस्था (पाठ्यक्रम में आवश्यक परिवर्तन) :– बच्चों की विशेष आवश्यकता के अनुसार विषय वस्तु को सामान्य अध्यापक विशेष अध्यापक के परामर्श से तैयार कर सकते है।

३. समेकित शिक्षा भवन (विशेष प्रकार के विद्यालय) :– गम्भीर रूप से विकलांग बच्चों को सामान्य विद्यालय के परिसर या निकटवर्ती विशेष प्रकार के विद्यालय में शिक्षा देने की व्यवस्था होनी चाहिए। आधारभूत अकादमी कौशलों के विकास के बाद इनमें से अधिकतर बच्चों को सामान्य विद्यालयों में पढ़ाया जा सकता है।

इसी प्रकार विशेष प्रकार की शिक्षा देने वाले आवासीय विद्यालय भी है जिनमें उन बच्चों को भेजा जाता है जिन्हें एकीकृत शिक्षा में नहीं पढ़ाया जा सकता है।

एकीकृत शिक्षा को सहज बनाने वाले कारक :

- सामान्य विद्यालयों में पढ़ने वाले बच्चो की कम अपंगता की पहचान एकदम प्रारम्भ में करना उपयुक्त है।
- गम्भीर विकलांगता होने पर प्रारम्भ में प्रशिक्षण तथा आवश्यक सुविधाएं सुलभ कराना जिससे यह ज्ञात हो सके कि किनको सामान्य कक्षाओं में बैठाया जा सकता है।
- इन बच्चों को निरन्तर उपचारात्मक सेवायें उपलब्ध कराना साथ ही उपकरणों के उपयोग सुझाना।
- बच्चों में रचनात्मक विश्वास जागृत करना तथा उन्हें जीवन में आगे बढ़ने के लिए मानसिक रूप से तैयार करना।
- विकलांग बच्चों के साथ सामान्य बच्चों जैसा व्यवहार किया जाना जिससे उनका सामान्य बच्चों की भांति विकास हो सके।
- समेकित शिक्षा में पढ़ने वाले बच्चों के लिए पाठ्यक्रम पर आधारित विषयवस्तु में परिवर्तन कर पहले से ही शिक्षक की रूपरेखा तैयार करना।
- अमूर्त तथा कठिन अवधारणाओं को स्पष्ट करने के लिए पर्याप्त सहायक सामग्री तैयार करना। तीन आयामों वाले माडलों का उपयोग करना।
- संसाधन (विशेष) अध्यापक की सहायता से अतिरिक्त शिक्षण सामग्री तैयार करना।
- विकलांग बच्चों में से प्रत्येक की शैक्षिक विशेषताओं और उनकी आवश्यकताओं की स्पष्ट जानकारी रखना।
- विद्यालय की प्रत्येक प्रकार की गतिविधि में प्रत्येक विद्यार्थी की भागीदारी सुनिश्चित करना जिससे बौद्धिक विकास के लिए सबको समान अवसर मिल सकें।

एकीकृत शिक्षा को सफल, प्रभावी तथा अर्थपूर्ण बनाने में सबसे महत्वपूर्ण कारक विकलांग बच्चों के साथ शिक्षक का स्नेहपूर्ण तथा सकारात्क व्यवहार है। इसके अतिरिक्त शिक्षण सम्बन्धी परिवर्तन या सुधार की अन्तर्दृष्टि भी अपेक्षित है जिससे इन बच्चों की आवश्यकतानुसार शिक्षण–अधिगम की व्यवस्था हो सके।

ख. विशेष आवश्यकताओं की पहचान तथा क्रियात्मक मूल्यांकन

यह सामान्य अनुभव–आधारित तथ्य है कि कक्षाओं में बच्चों की सीखने और उसके आधार पर कार्य करने की योग्यता के स्तर पृथक–पृथक होते हैं। कुछ बच्चे ऐसे होते है जिन्हें सीखने में अपेक्षाकृत अधिक समय और प्रयास की आवश्यकता होती है। कुछ ऐसे भी बच्चे मिलते है जिन्हें सीखने में कठिनाई होती है और उन्हें सीखने तथा कार्य करने में अध्यापकों से विशेष सहायता की आवश्यकता होती है।

सीखने में कठिनाई कई कारणों से होती है, जैसे मानसिक योग्यता का निम्न स्तर, विकास में विलम्ब, देखने, सुनने और बोलने में कठिनाई, मांसपेशियों को क्षति, किसी अंग का न होना या विकृत होना, समझने, याद रखने में कठिनाई आदि। घर के वातावरण में माता–पिता का प्यार न मिलने, परिवार के सदस्यों द्वारा स्वीकृति न मिलने, बातचीत का अवसर न मिलने आदि कारणों से बच्चों को सीखने में कठिनाई होती है। विद्यालय के वातावरण में शिक्षक से स्वीकृति न मिलने, कक्षा कक्ष में मिला स्नेहहीन व्यवहार, सामान्य बच्चों द्वारा स्वीकार न किये जाने की स्थिति विशिष्ट व्यक्तिगत आवश्यकता के अनुसार गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का अभाव, अपेक्षित भौतिक सुविधाओं की कमी आदि ऐसे कारण है जिनसे अक्षमताग्रस्त बच्चों को सीखने में कठिनाई का अनुभव होने लगता है।

प्रारम्भिक अवस्था में विशेष आवश्यकताओं की पहचान :–

यदि प्रारम्भिक अवस्था में ही बच्चों की सीखने में होने वाली कठिनाई के कारणों की पहचान कर ली जाय तो इन कठिनाइयों को दूर करने में उनकी सहज ढंग से सहायता की जा सकती है। मूल्यांकन से कठिनाई के क्षेत्रों का पता चल जाता है जहाँ, विशेष रूप से बच्चों की सीखने और कार्य करने की योग्यता की जाँच हो जाती है और उनसे यह स्पष्ट हो जाता है कि उन कठिनाइयों के निवारण के लिए किस प्रकार की सामग्री, उपकरण आदि की आवश्यकता होगी। प्रारम्भ से ही बच्चों की विशेष आवश्यकताओं की पहचान तथा मूल्यांकन करने से निम्नलिखित कार्यों में सहायता प्राप्त होती है :

– अक्षमता की दशा में और गिरावट आने की संभावना को रोकना।

– अकादमी क्षेत्र में बार–बार की विफलता से उत्पन्न निराश बच्चों को विद्यालय छोड़ने से रोकना।

– अक्षमता के प्रभावों का निवारण करने के लिए उपयुक्त शिक्षण सामग्री उपकरण आदि उपलब्ध कराना।

– प्रारम्भ में ही प्रोत्साहन कार्यक्रमों द्वारा उन्हें शिक्षा ग्रहण करने के लिए तैयार करना और छोटी–मोटी अक्षमताओं तथा गड़बड़ियों को रोकना।

क्रियात्मक मूल्यांकन

बच्चों के क्रियात्मक मूल्यांकन के लिए यह सदैव संस्तुति की जाती है कि यह कार्य एक डाक्टर, एक मनोवैज्ञानिक तथा एक शिक्षक की टीम द्वारा किया जाना चाहिए। विकसित देशों में ऐसे समूह सुलभ है किन्तु अधिकतर विकासशील देशों में विशेषतः ग्रामीण क्षेत्र में ऐसी सुविधाएं नहीं है। उदाहरण के लिए "सन् २००० तक सभी के लिए स्वास्थ्य" हमारे देश का लक्ष्य है। इससे स्पष्ट है कि अनेक ग्रामीण क्षेत्र स्वास्थ्य सुविधाओं से वंचित रहेंगे। मनोवैज्ञानिक सेवाओं की स्थिति तो और भी निराशाजनक है।

समूचे देश में एक मात्र सुलभ सुविधा हमारे विद्यालय तथा अध्यापक है। अतः हमें शिक्षकों को इस प्रकार प्रशिक्षित करके तैयार कर देना चाहिए कि वे बच्चों की विशेष आवश्यकताओं, विशेषतः उन कार्यों को करने के क्षेत्र में जिन्हें समुदाय के अन्य सामान्य बच्चे कर लेते हैं, की पहचान करने तथा मूल्यांकन करने में समर्थ हो सकें।

इससे यह जानकारी भी मिल सकेगी कि बच्चे किन कार्यों को करने में कठिनाई का अनुभव करते हैं। आप को यह भी सोचना चाहिए कि किस प्रकार बच्चों के कार्य करने की क्षमता के स्तर को सुधारा जा सकता है। इस हस्तपुस्तिका में प्रयोग किये गये क्रियात्मक मूल्यांकन की यही अवधारणा है।

इस प्रकार का क्रियात्मक मूल्यांकन करने से शिक्षक को यह पता चल जायेगा कि अक्षमता से ग्रस्त बच्चे के पुनर्वास तथा शैक्षिक कार्यक्रम के लिए किन साधनों की आवश्यकता होगी जो स्थानीय स्तर पर सुलभ हो सकेंगे। इससे वह गुणवत्ता में सुधार के लिए विशेष प्रकर की सहायता के लिए भी प्रयास कर सकेंगे। जो कुछ वह करेगा और जितना सफल होगा, उससे विकलांग या अक्षमताग्रस्त बच्चों, विशेषतः ग्रामीण क्षेत्र के सुदूर अंचलों के बच्चों की सेवा–सहायता का स्तर ऊँचा हो जायेगा।

विशिष्ट आवश्यकताओं वाले बच्चों की पहचान :

जिन बच्चों की विशेष प्रकार की आवश्यकताएं है उनकी सहायता के लिए सुनियोजित प्रयास करने की आवश्यकता है। बच्चों को उनका चेहरा तथा व्यवहार का ढंग देखकर पहचाना जा सकता है। ऐसे बच्चो की विशेषताओं तथा व्यवहार के स्वरूप की जाँच के लिए कुछ जाँच तालिकाएँ नमूने के लिए दी जा रही है। इनमें प्रश्न पूछे गये है जिनका 'हाँ' या 'नहीं' में उत्तर देना है। इसके अतिरिक्त अक्षमता की जाँच हेतु निर्देश तथा उनके सचित्र उदाहरण प्रत्येक के अन्त में दिये गये है।

जाँच तालिका

(क) दृष्टि सम्बन्धी	हाँ	नहीं
१. क्या बच्चे की आँख में स्पष्ट दृष्टिगत होने वाली कोई विकृति है?	☐	☐
२. क्या बच्चे की आँखों में बार–बार पानी भर आता है?	☐	☐
३. क्या बच्चे की आँखें बार–बार लाल हो जाती है?	☐	☐
४. क्या बच्चा बार–बार आँख मलता है?	☐	☐
५. क्या बच्चा बार–बार आँख मिचमिचाता है?	☐	☐
६. क्या बच्चा बार–बार आँखों में दर्द की शिकायत करता है?	☐	☐
७. क्या बच्चा एक आँख को ढककर आगे की तरफ देखता है?	☐	☐
८. क्या बच्चा सिर नीचा करके चलता है?	☐	☐
९. क्या बच्चा पढ़ते समय पुस्तक को आँख के बहुत करीब रखता है?	☐	☐
१०. क्या बच्चा श्यामपट्ट से देखकर लिखते समय अन्य बच्चों से बार–बार पूछता है?	☐	☐
११. क्या बच्चा पढ़ने–लिखने का काम करने के बाद आँख में दर्द की शिकायत करता है?	☐	☐

टिप्पणी : यदि बच्चे के बारे में कम से कम चार प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' में है तो बच्चे में दृष्टि सम्बन्धी अक्षमता होने की संभावना है।

(ख) श्रवण सम्बन्धी	हाँ	नहीं
१. क्या बच्चे के कान में सहज ही दिखाई पड़ने वाली कोई विकृति है?	☐	☐
२. क्या बच्चा बार–बार कानों में दर्द की शिकायत करता है?	☐	☐
३. क्या बच्चे का एक कान या दोनों बहते है?	☐	☐

४. क्या बच्चा बार–बार कान खुजाता है?

५. क्या बच्चा और अच्छी तरह सुनने के लिए वक्ता की ओर अपना सिर मोड़ता है?

६. क्या बच्चा शिक्षक से बार–बार निर्देश दुहराने के लिए कहता है?

७. क्या बच्चा श्रुत लेख लिखते समय विशेषतः स्वर ध्वनियों को लिखने में त्रुटियाँ करता है?

८. सुनते समय क्या बच्चा शिक्षक के चेहरे पर आँख गड़ाकर देखता है जिससे कही गई बात का अन्दाजा लगा सके?

९. क्या बच्चा शिक्षक के बोलने के समय पास बैठे सहपाठी की नोट–बुक को बार–बार देखकर कुछ उतारता है?

टिप्पणी – यदि चार प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' में हैं तो बच्चे में श्रवण सम्बन्धी अक्षमता सम्भावित है। आगे और मूल्यांकन की आवश्यकता है।

(ग) बोलने से सम्बन्धित — **हाँ** **नहीं**

१. क्या बच्चे के मुँह में कोई स्पष्ट दिखाई पड़ने वाली विकृति हैं?

२. क्या बच्चा बोलते समय बार–बार अस्वाभाविक रूप से रूकता है?

३. क्या बच्चा बोलते समय शब्दों में कुछ ध्वनियों को छोड़ देता है?

४. क्या बच्चा बार–बार हकलाता है?

५. क्या शिक्षक द्वारा सुधार कराने के बावजूद बच्चा बार–बार इस प्रकार अशुद्ध उच्चारण करता है कि समझ पाना कठिन है?

६. क्या बच्चे से बात करने के समय उसकी बात को समझना कठिन है?

७. क्या बच्चा 'य' की जगह 'ल' या 'र' का प्रयोग करता है?

टिप्पणी :– यदि तीन प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' में हों तो उसमें बोलने से सम्बन्धित अक्षमता है तथा और अधिक मूल्यांकन की आवश्यकता है।

(घ) अंग–संचालन सम्बन्धी अक्षमता

		हाँ	नहीं
१.	क्या बच्चे के निम्नलिखित अंगों में से किसी में सहज ही दिखाई पड़ने वाली विकलांगता है :		
	⌘ गर्दन में?	☐	☐
	⌘ हाथों में?	☐	☐
	⌘ अंगुलियों में?	☐	☐
	⌘ कमर में?	☐	☐
	⌘ टाँगों में?	☐	☐
२.	क्या बच्चे को कठिनाई होती है	हाँ	नहीं
	⌘ बैठने में?	☐	☐
	⌘ खड़े होने में?	☐	☐
	⌘ चलने फिरने में?	☐	☐
३.	क्या बच्चे को कोई वस्तु उठाने, पकड़ने और जमीन पर रखने में कठिनाई होती है?	☐	☐
४.	क्या बच्चा शरीर के जोड़ो में दर्द की बार–बार शिकायत करता है?	☐	☐
५.	क्या बच्चे को लिखते समय कलम पकड़ने में कठिनाई होती है?	☐	☐
६.	क्या बच्चा झटके के साथ चलता है?	☐	☐
७.	क्या बच्चे के शरीर के अंग अनजाने ही संचालित हो जाते है?	☐	☐
८.	क्या बच्चे के शरीर के अंग कटे या छिन्न है?	☐	☐

टिप्पणी – यदि इनमें से तीन प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' में है तो बच्चे के मूल्यांकन की आवश्यकता है।

(ङ) **बौद्धिक क्रिया का निम्नतर स्तर**

		हाँ	नहीं
१.	क्या बच्चे को अपने आप खाना खाने, कपड़े पहनने, नहाने, तैयार होने जैसे कार्यों में कठिनाई होती है?	☐	☐
२.	जब आप बच्चे को कोई काम करने के लिए कहते है तब ऐसा लगता है कि उसे आपकी बात समझने में कठिनाई हो रही है?	☐	☐
३.	क्या बच्चा अपनी उम्र के अन्य बच्चों की तुलना में किसी प्रकार मन्द या धीमा मालूम पड़ता है?	☐	☐
४.	अपनी उम्र के बच्चों की तुलना में क्या बच्चे को कोई काम करना या सीखने में कठिनाई मालूम पड़ती है?	☐	☐
५.	क्या बच्चे को अमूर्त बातों को समझने में कठिनाई होती है?	☐	☐
६.	अपनी उम्र के बच्चों की अपेक्षा क्या बच्चे को कोई चीज सीखने के लिए अधिक आवृत्ति तथा अभ्यास की आवश्यकता होती है?	☐	☐
७.	अपनी उम्र के अन्य बच्चों की तुलना में क्या बच्चे को कोई कौशल या काम सीखने में अधिक समय लगता है?	☐	☐
८.	क्या बच्चा सीखने के लिए ठोस उदाहरणों पर बहुत अधिक निर्भरता दर्शाता है?	☐	☐
९.	क्या बच्चा अपनी उम्र के बच्चों की भाँति कक्षा कक्ष के अधिक से अधिक क्रियाकलापों में भाग लेता है?	☐	☐

टिप्पणी : यदि इनमें से चार प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' में हैं तो बौद्धिक क्रिया के निम्न स्तर की जाँच के लिए बच्चे का मूल्यांकन करने की आवश्यकता है।

(च) **सीखने से सम्बन्धित अक्षमता**

		हाँ	नहीं
१.	क्या बच्चा पर्याप्त रूप से भली प्रकार नहीं पढ़ पाता है यद्यपि उसके मौखिक उत्तर बुद्धिमत्तापूर्ण होते है?	☐	☐
२.	क्या बच्चा शब्दों मे अक्षर छोड़ते हुए वर्तनी की अशुद्धियाँ करता है (जैसे अंग्रेजी भाषा के 'रिमेम्बर' शब्द के लिए 'रेम्बर' लिखना) अथवा 'य' 'र' इत्यादि लिखने में भूल करता है?	☐	☐
३.	क्या बच्चा शब्दों में अक्षरों के स्थान बदलकर वर्तनी की अशुद्धियाँ करता है? (जैसे अंग्रेजी भाषा के 'टैप' शब्द के लिए 'पैट' और 'लेफ्ट' के लिए 'फेल्ट' लिखना)	☐	☐

४. क्या बच्चा संख्याओं को गलत रूप में लिखता है (जैसे १२ को २१ लिखना)

५. क्या बच्चा संख्याओं को गलत पढ़ता है? (जैसे अंग्रेजी अंकों में ६ को ९, ३, को ८)

६. क्या बच्चा बार–बार इतना उत्तेजित हो जाता है कि वह कोई काम पूरा करने में असमर्थ रहता है?

७. क्या बच्चा पढ़ने में बार–बार शब्दों या पंक्तियों को छोड़ जाता है?

८. क्या बच्चा शब्दों में एक–एक अक्षर को पढ़ता है किन्तु अक्षरों को एक साथ सम्मिलित ध्वनि के साथ पढ़ने में कठिनाई का अनुभव करता है (जैसे अंग्रेजी भाषा के बी/ई/जी वर्णो की ध्वनि पढ़े और 'बैड' कहे या एफ/आर/ओ/जी ध्वनि पढ़े और फोग कहे)।

९. पढ़ते समय क्या बच्चा शब्दों का अनुमान लगाता है?

१०. लिखते समय क्या बच्चा भद्दे ढंग से लिखता है और सीधी पंक्तियों में लिखने में विफल रहता है?

११. क्या बच्चा परीक्षा में अच्छा प्रदर्शन नहीं करता है यद्यपि वह बुद्धिमान है तथा कोई शारीरिक विकलांगता भी नहीं है?

१२. क्या बच्चा अन्यमनस्क दिखाई पड़ता है और बार–बार समय सारणी को भूल जाता है?

टिप्पणी :– यदि इनमें से चार प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' में हैं तो बच्चे को अधिगम अक्षमता की जाँच की आवश्यकता है।

ध्यान देने योग्य बिन्दु :– पढ़ने, वर्तनी बताने, लिखने तथा गणित में कठिनाई का अनुभव करने वाले बच्चों में सीखने से सम्बन्धित अक्षमता की पुष्टि यह सुनिश्चित करने के लिए कर ले कि उनमें सुनने या देखने की क्षमता क्षीण तो नहीं है और मानसिक क्रिया करने का स्तर निम्न तो नहीं है।

पहचान सम्बन्धी जाँच तालिकाओं के आधार पर हम बच्चों की संभावित विशिष्ट आवश्यकताओं की पहचान कर सकते हैं। हमें यह सन्देह हो जाता है कि कुछ क्षीणताओं के कारण किसी बच्चे में अक्षमता आ जाती है। उपलब्ध विशेषज्ञों की सहायता से और आगे मूल्यांकन या जाँच करके इनकी पुष्टि करने की आवश्यकता है। मूल्यांकन के लिए ऐसे सन्दर्भ कार्ड का प्रयोग किया जाता है जिसमें पहचान जाँच तालिका का प्रयोग करते हुए बच्चे में देखी गयी विशेषताओं का सारांश दिया रहता है।

ऐसे बच्चों की विधिवत मूल्यांकन के लिए मार्गदर्शक बिन्दु आगे दिये गये है।

lksfp, vkSj dhft,

१. क्या आपकी कक्षा में ऐसे बच्चे है जिन्हें सीखने में कठिनाई होती है?

२. क्या आपने उनकी अधिगम समस्याओं की पहचान कर ली है?

३. क्या देखने या सुनने की क्षमता की क्षीणता के कारण इन बच्चों में से किसी को सीखने में कठिनाई होती है?

४. क्या इन बच्चों में से किसी में मानसिक क्रिया का निम्नतर स्तर है?

५. क्या इन बच्चों में से किसी के शारीरिक अंग में कोई समस्या है जिससे लिखने या प्रयोग करने जैसे अकादमिक क्रियाकलाप करने में बाधा पड़ती है?

नीचे दिये गये स्थान में अपनी कक्षा के उन बच्चों का उल्लेख कीजिए जो संख्या ३, ४ तथा ५ वाली क्षीणताओं से ग्रस्त है।

देखने से सम्बन्धित क्षीणता

सुनने से सम्बन्धित क्षीणता

मानसिक क्रिया का निम्नतर स्तर

शारीरिक अंगों के संचालन में कठिनाई उत्पन्न करने वाली क्षीणता

६. क्या आप सोचते है कि आपने सभी क्षीणताओं की पहचान कर ली है या उनमें से कुछ आपकी निगाह में आने से बच गयी हैं?

७. क्या आप विशिष्ट आवश्यकताओं वाले इन सभी बच्चों की पहचान करना पसन्द करते हैं जिससे सीखने में आप उनकी मदद कर सकें।

lUnHkZ dksM¼fjQjy dkMZ½

१. बच्चे का नाम ....

२. उम्र .... वर्ष .... महीने ....

३. लिंग ....बालक ....बालिका ....

४. विद्यालय ....स्थान ....पिनकोड ....

५. कक्षा .... ६. वर्ग ....

७. पिता/माता का नाम ....

८. पता .... मकान संख्या .... गाँव/बस्ती/कस्बा ....
डाकघर ....

९. पेशा .... पिता .... माता ....

१०. शिक्षा (टिक का निशान लगाइए)

(क) पिता	(ख) माता
( ) निरक्षर	( ) निरक्षर
( ) प्राथमिक	( ) प्राथमिक
( ) उच्च प्राथमिक	( ) उच्च प्राथमिक
( ) माध्यमिक	( ) माध्यमिक
( ) उच्चतर माध्यमिक	( ) उच्चतर माध्यमिक
( ) स्नातक	( ) स्नातक
( ) स्नातकोत्तर	( ) स्नातकोत्तर

११. भाषा : घर में प्रयुक्त .... विद्यालय में ....

१२. विशिष्ट आवश्यकता का संभावित क्षेत्र (किसी बच्चे की एक से अधिक क्षेत्रों में विशिष्ट आवश्यकताएँ हो सकती हैं। सम्बन्धित क्षेत्र के सामने टिक का निशान (✓) लगाइए।

( ) देखने से सम्बन्धित क्षीणता

( ) सीखने से सम्बन्धित क्षीणता

( ) मानसिक क्षीणता

( ) सुनने से सम्बन्धित क्षीणता

( ) विकलांगता से सम्बन्धित अक्षमता

क्रियात्मक मूल्यांकन हेतु मार्गदर्शक बिन्दु

क्रियात्मक मूल्यांकन विशेष शिक्षा में प्रशिक्षित सामान्य अध्यापक, विशेष अध्यापक या जहाँ कहीं उपलब्ध हों, वहाँ विद्यालय परामर्शदाता द्वारा किया जा सकता है। यदि किसी विशेष क्षेत्र में तीनों उपलब्ध हैं तो वे एक दल (टीम) के रूप में मिलकर कार्य कर सकते है। क्रियात्मक मूल्यांकन करने वाले व्यक्ति को यह सुनिश्चित कर लेना चाहिए कि –

१. उसे समय सुलभ है (इस कार्य में एक से अधिक बैठकों की आवश्यकता हो सकती है)।

२. उसमें धैर्य है (कुछ बच्चे मूल्यांकन कार्य के साथ तालमेल रखने तथा सहयोग देने में समय लेंगे)।

३. उसे स्थानीय परिवेश में ऐसे कार्यों की पर्याप्त जानकारी है जिन्हें सामान्य बच्चे (गैर विकलांग बच्चे) कर सकते हैं।

४. उसके पास अलग–अलग कार्य के लिए आवश्यक सामग्री है। बच्चे के सामने सभी सामग्रियों का एक ही बार में प्रयोग करने की आवश्यकता नहीं होगी।

५. उसे मूल्यांकन के लिए स्थान उपलब्ध है जहाँ शिक्षक और बच्चा बाहरी अवरोधों के बिना एक दूसरे को प्रभावित कर सकते है।

६. मूल्यांकन के समय बच्चा बीमारी या थकान से ग्रस्त न हो।

७. मूल्यांकन समय–समय पर किया जाना चाहिए क्योंकि मूल्यांकन के बाद शिक्षा तथा पुनर्वास द्वारा विकलांग बच्चों की योग्यताओं में सुधार हो सकता है।

८. अकेले तथा समूह में बच्चे द्वारा किये जाने वाले कार्य का अवलोकन किया जाना चाहिये।

क्रियात्मक मूल्यांकन दर्शिका में तालिका के रूप में उस क्षेत्र का उल्लेख रहता है जिसका मूल्यांकन किया जाता है (स्तम्भ–१), इसके बाद अपनायी जाने वाली विधि तथा निकाले जाने वाली निष्कर्ष का उल्लेख किया जाता है (स्तम्भ–२)

आप इन मार्गदर्शक बिन्दुओं का अनुपालन करते हुए क्रियात्मक मूल्यांकन को पूरा कर सकते है। इसके पश्चात् आप निम्नवत् सार–संक्षेप तैयार कर सकते है :

(क) बच्चा क्या कर सकता है?

(ख) बच्चा क्या नहीं कर सकता है या विकलांगता अथवा अक्षमता के कारण क्या करने में उसे कठिनाई होती है?

(ग) बच्चे को सीखने की क्षमता में सुधार लाने हेतु सहायता देने के लिए निम्नलिखित के माध्यम से क्या सुधारात्मक उपाय किये जा सकते है :

१. चिकित्सीय सहायता

२. विशिष्ट सामग्रियाँ तथा उपकरण (बैसाखी, चश्मा, श्रवणयंत्र आदि)।

(घ) पाठ्यक्रम तथा शिक्षण का समायोजन एवं अनुकूलन।

(ङ) कक्षा–कक्ष का प्रबन्धन (बैठने की व्यवस्था आदि)।

(च) विशिष्ट प्रकार का व्यवहार करने वाले बच्चों की व्यवस्था (जैसे दृष्टिहीन बच्चों में व्यवहार की विचित्रता, विकलांगता के परिणामस्वरूप व्यवहार में आया परिवर्तन जैसे उग्रता या अलगाव की प्रवृत्ति)।

आपके क्षेत्र में जब कभी विकलांग बच्चों का मूल्यांकन करने के लिए कोई अभिकरण या संस्था उपलब्ध हो तब आप उनकी सहायता ले सकते हैं उन्हें आपके क्रियाकलापों के साथ सम्बद्ध किया जा सकता है।

क्रियात्मक मूल्यांकन दर्शिका

दी गयी अनुसूची को पूरा करके आप क्रियात्मक मूल्यांकन प्रारम्भ कर सकते हैं। अपने अवलोकन तथा मूल्यांकन के आधार पर आप प्रत्येक स्तम्भ के सामने आवश्यकतानुसार टिक का निशान (✓) लगा सकते है।

सीखने, सुनने, देखने में अक्षमता, शारीरिक अंगों की विकलांगता तथा मानसिक मन्दता से ग्रस्त बच्चों के क्रियात्मक मूल्यांकन को आगे उदाहरण सहित स्पष्ट किया गया है।